सत्यमेव जयते

श्री कलराज मिश्र जी

माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं
कुलाधिपति का उद्‌बोधन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर का
द्वितीय दीक्षान्त समारोह (ऑनलाईन)

दिनांक : 18 जनवरी, 2021 समय : अपराह्न 12.30

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के द्वितीय दीक्षांत समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री अशोक गहलोत जी, मुख्यमंत्री, राजस्थान, श्री लालचंद कटारिया जी, कृषि मंत्री, डॉ त्रिलोचन महापात्र, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं सचिव, कृषि शिक्षा एवं अनसुंधान विभाग, नई दिल्ली, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति प्रो. बी.आर. चौधरी, प्रबंध मण्डल व विद्या परिषद के सदस्यगण, शिक्षकगण, अधिकारीगण, मीडिया बन्धुओं एवं उपाधि तथा पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों, अभिभावकगण, भाईयों और बहनों।

दीक्षांत का अर्थ है, शिक्षित। जिसने शिक्षा प्राप्त कर ली है। दीक्षांत विद्यार्थी का एक तरह से नव जीवन है। अर्जित शिक्षा और संस्कारों से विद्यार्थी को भविष्य के नए कार्य की समाज और अपने हित में शुरूआत करनी है। इस अवसर पर मैं उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई एवं शुभकामनायें देता हूँ। मेरा आप सभी उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से अनुरोध है कि आपने जो शिक्षा विश्वविद्यालय में प्राप्त की है, उसका उपयोग राष्ट्र और समाज के भले के लिए अधिकाधिक कैसे हो, इस पर विचार करते हुए भविष्य की अपनी राहों का निर्माण करें।

इस दीक्षान्त समारोह को सफल बनाने हेतु विश्वविद्यालय के अधिकारियों, शिक्षकों और कार्मिकों को भी मेरी बधाई और शुभकामनायें।

कृषि आज भी भारतीय जीवन की रीढ़ है। इसलिए कृषि शिक्षा का भी बेहद महत्व है। कृषि संबंधित ज्ञान में अन्य विज्ञानों की शिक्षा की प्रधानता का भी सदा से मैं पक्षधर रहा हूं। मेरा यह मानना है कि कृषि शिक्षा का जो बना–बनाया ढर्रा है, उसे बदलने की जरूरत है। विश्वविद्यालय यह प्रयास करे कि कैसे कृषि शिक्षा आधुनिक समय के अनुरूप हो। इसके लिए मैं ऐसे प्रबंध तंत्र को विकसित करने का सुझाव देता हूं जिसके तहत कृषि शिक्षा का व्यावहारिक उपयोग उपाधि प्राप्त करने के बाद युवा कर सके। हमें चाहिए कि हम ऐसे अवसर शिक्षा के दौरान ही सृजित करें जिससे कृषि विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले युवा राजकीय सेवाओं में जाने की बजाय कृषि संबंधित कार्यों, उद्यमों और खेती–बाड़ी का कार्य करने के प्रति उत्सुक और लालायित रहें। निश्चित ही इसके लिए वृहद सोच रखते हुए कार्य करने की जरूरत है।

मेरा यह भी सुझाव है कि कृषि से संबंधित जो पारम्परिक ज्ञान है, उसे भी कृषि शिक्षा के तहत सहेजे जाने का कार्य किया जाए। मैं यह मानता हूं कि खेतों में जो किसान कार्य करते हैं, उनके पास पुरखों का संजोया हुआ बेहद महत्वपूर्ण ज्ञान खेती–बाड़ी से संबंधित हैं। ऐसे ज्ञान को विश्वविद्यालयों की प्रसार शिक्षा के अंतर्गत संग्रहित कर प्रकाशित–प्रसारित करने की जरूरत है। खेतों के असली वैज्ञानिक तो किसान ही होते हैं। इन वैज्ञानिकों के भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के अनुभवों, अधिक पैदावार के लिए किए जाने वाले उपायों, उन्नत किस्म के बीजों से सबंधित ज्ञान और कम पानी में

अधिक उपज आदि के पारम्परिक ज्ञान को विद्यार्थी शिक्षा के दौरान ही प्राप्त करे और फिर उसका व्यवहार में उपयोग करें तो देश में कृषि को बहुत अधिक विकसित किया जा सकता है।

विश्वविद्यालयों को चाहिए कि वे किसानों के व्यावहारिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ते हुए ऐसे पाठ्यक्रम और प्रसार शिक्षा की सामग्री तैयार करे जिसका वृहद स्तर पर खेती–किसानी में उपयोग हो सके। गांवों में खेतों पर जाएंगे तो अभी भी बड़े बुर्जुग ऐसे–ऐसे तरीकें आपको बता सकते हैं जिनसे खेती को और अधिक उन्नत किया जा सकता है। ऐसे तरीकों में आधुनिक विज्ञान को जोड़ते हुए भविष्य के पाठ्यक्रम और प्रसार सामग्री हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं में तैयार होती है तो इसका व्यवहार में किसानों को लाभ मिल सकता है।

कृषि विश्वविद्यालय भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए इस तरह से कार्य करे कि न केवल भूमि का उर्वरापन बना रहे बल्कि अधिक क्षेत्र में पैदावार को भी संभव किया जा सके। प्राचीन कृषि प्रणाली में फसले बदल–बदल कर बोई जाती थी। एक समय में एक ही नहीं एक से अधिक फसलें बोने का प्रचलन था। इस तरह की तकनीक को आधुनिक समय में भी समय संदर्भों के साथ उपयोग करने पर कार्य किया जाना चाहिए।

जैविक खेती भारतीय कृषि शैली की एक प्राचीन विधा रही है परन्तु इसके विपरीत कृषि में अनावश्यक रसायनों के बढ़ते उपयोग से आज हमें कई असाध्य रोगों के रूप मे दुष्परिणाम

भुगतने पड़ रहे हैं। सौभाग्य से राज्य का पश्चिमी क्षेत्र कृषि रसायनों एवं उर्वरकों के न्यूनतम उपयोग की वजह से अभी भी काफी हद तक इन दुष्परिणामों से बचा हुआ हैं। विश्वविद्यालय द्वारा जैविक खेती को प्रोत्साहित करते हुए इस दिशा में और अधिक नवाचार करने की जरूरत है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि विद्यार्थियों को उन्नत कृषि तकनीकी साहित्य उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कृषि विश्वविद्यालय के शिक्षकों, वैज्ञानिकों एवं विषय विशेषज्ञों ने 100 से अधिक प्रकाशन किये है। विश्वविद्यालय 'मरूधरा कृषि' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है तथा विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर किसान पोर्टल भी शुरू किया गया हैं। मेरी इसके लिए बहुत बहुत बधाई।

मुझे यह बताया गया है कि विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र 'पश्चिमी राजस्थान' के शुष्क एवं अर्द्ध–शुष्क क्षेत्रों हेतु कृषि शिक्षा, अनसुंधान एवं तकनीकी हस्तांतरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। फसल सुधार अनुसंधान के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य करते हुऐ यहॉ की भौगोलिक परिस्थतियों में उत्तम प्रदर्शन करने वाली तिल की आर.टी. 372 एवं आर.टी. 351 किस्में तथा बाजरा की संकर किस्में एम.पी.एम.एच. 17 एवं एम.पी.एम.एच 21 हाल ही में विकसित की है जो राज्य एवं देश के विभिन्न भागों के कृषक समुदाय द्वारा पसंद की जा रही हैं। किसानों की आय बढ़ानें के लिए कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंडोर द्वारा कम अवधि में पकने वाली मोठ की किस्म आर.एम.ओ 40 विकसित करने, कृषि में विविधता को बढ़ावा देते हुए नई

फसलों जैसे चीया, क्वीनोआ, चिकोरी (कॉफी उत्पाद में प्रयुक्त), केमोमाईल (चाय) तथा मोटे अनाज (मिलेट्स) पर विश्वविद्यालय जो कार्य कर रहा है, वह महत्वपूर्ण है।

यह समय सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही कृषि से जुड़े नवीतम ज्ञान को अधिकाधिक अपनाने का है। यह जानना सुखद है कि विश्वविद्यालय ने फसलों की जरूरत के अनुरूप जल उपयोग हेतु कम्प्यूटरिकृत सेंसर आधारित स्वचालित सिंचाई प्रणाली स्थापित की है जिससे सब्जियों, मसाला फसलों एवं अन्य फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई प्रबन्धन कर जल संरक्षण हेतु अनुसंधान कार्य किये जा रहे है। मेरा यह मानना है कि इससे न केवल जल की बचत होगी अपितु पोषक तत्वों, कीटों एवं बीमारियों के प्रबंधन में भी फायदा होगा। उम्मीद करता हूं, राज्य के किसानों के लिए यह भविष्य में बेहद लाभकारी होगा।

विश्वविद्यालय द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संस्थान जैसे जैव–विविधता अंतर्राष्ट्रीय, रोम (जेफ) एवं क्रीक हाउस ट्रस्ट, इंग्लैण्ड तथा राष्ट्रीय संस्थान, भाभा परमाणु अनंसुधान केन्द्र, मुम्बई के साथ भी विभिन्न परियोजनाओं में कार्य करने, भारतीय गेंहूँ एवं जौं अनुसंधान संस्थान, करनाल एवं डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन्न राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के साथ भी अनुसंधान के साझा कार्य जो किए जा रहे हैं, वह सराहनीय हैं।

कोविड–19 महामारी का यह दौर बेहद विकट रहा है। ऐसे समय में विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा में नवाचार कर

ऑनलाईन कक्षाऐं संचालित करने और विद्यार्थियों का अध्यापन एवं सतत मार्गदर्शन करना महत्वपूर्ण है। यह समय की आवश्यकता भी है।

मुझे यह बताया गया है कि विश्वविद्यालय द्वारा डेयरी प्रौद्योगिकी का नवीन संकाय प्रारंभ किया गया है तथा कृषि अभियांत्रिकी संकाय शुरू करने के प्रयास किये जा रहे हैं। मैं समझता हूं, इससे इस विश्वविद्यालय को बहुसंकाय विश्वविद्यालय के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी। इसी प्रकार एससी–एसटी वर्ग के विद्यार्थियों को कृषि शिक्षा से जोड़ने एवं किसानों के लाभ हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा एससी–एसपी परियोजना स्वीकृत की गई है।

कृषि विकास के साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि हम पर्यावरण संरक्षण की सोच को ध्यान मे ंरखते हुए कार्य करें। इस संबंध में मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लगभग 10,000 पौधों का रोपण किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा लगभग 80 लाख लीटर के वर्षा जल भंडारण की संरचनाऐं निर्मित करने, 470 किलोवॉट क्षमता के सौर ऊर्जा संयत्रो की स्थापना करने आदि के आपके कदम दूसरों के लिए भी अनुकरणीय हैं।

प्रदेश का यह मरूक्षेत्र अपनी भौगोलिक और जैविक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यहां होने वाली फसलों में जीरा, ईसबगोल, मूंग, ग्वार, मोंठ, तिल, सौंफ, मेहंदी, पान मैथी,

अरंडी इत्यादि महत्वपूर्ण फसलें हैं तथा कैर, सांगरी, कुम्मठ, लसोड़ा, पीलू, सेवण घास और काचरी भी इस क्षेत्र की जैव विविधता की धरोहर को विश्व–पटल पर स्थापित कर रही हैं। इस विविधता का उपयोग करते हुए भविष्य की चुनौतियों से निपटने हेतु अनुसंधान कार्य किए जाने चाहिए। इसके साथ ही फसलों की प्राकृतिक आपदाऐं और सूखा सहन करने वाली किस्में विकसित करने पर भी विश्वविद्यालयों को ध्यान देने की जरूरत है।

विश्वविद्यालय के युवाओं का मैं यह आह्वान करता हूँ कि इस तरह के नये स्टार्ट–अप्स विकसित करे जिनसे पश्चिमी राजस्थान में उपलब्ध कृषि उत्पादों का समूचित व्यवसायिकरण किया जा सके।

यह जानना मेरे लिए सुखद है कि विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गॉव लूणी में लगभग 2 हेक्टेयर क्षेत्रफल में तारबंदी कर विभिन्न प्रजातियों के लगभग 650 पौधों का रोपण कर उनका पालन एवं संरक्षण का कार्य किया जा रहा है। आने वाले समय में इसे एक बेहतरीन ऑक्सी–पार्क के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

दीक्षांत समारोह के इस पावन अवसर पर मैं उपाधि प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों से आह्वान करता हूँ कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए कृषि को अपने जीवन का ध्येय बनायें। यह संकल्प लें कि राष्ट्रोत्थान एवं किसानों के चहुँमुखी विकास में भविष्य में आप अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगें।

मैं एक बार पुनः उपाधि और पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को बधाई देता हूँ। आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी बहुत–बहुत शुभकामनायें।

धन्यवाद।

जय हिन्द।